ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-VI JUNE 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

कबीर के माया संबंधी विचार

डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेन

प्र.प्रधानाचार्य,

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के अंतर्गत मुख्य दो धाराएँ प्रवाहित हुई निर्गुण भक्तिधारा तथा सगुण भक्तिधारा। कबीर निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक रहे। निर्गुण के अंतर्गत दो धाराएँ आती है– संत काव्यधारा तथा प्रेममार्गी शाखा।

भारत के लगभग सभी संतों ने माया से सावधान रहने के लिए कहा है। माया सभी व्यक्तियों के जीवन में विभिन्न अवसर पर विभिन्न रूप में असर करती है। श्रीमद् भगवद गीता के अठारहवे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

''ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्येशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया।''[1]

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं– हे अर्जुन! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में रहता है और अपनी माया से सब जीवों का इस प्रकार संचालन करता है मानों वे यंत्रपर सवार हो।

कबीर के माया संबंधी विचारों का संकलन माया कौ अंग में प्राप्त होता है। माया के स्वरूप को प्रतिपादित करते हुए कबीर कहते हैं–

''जग हटवाड़ा स्वाद ठग, माया वेसौ लाइ।

रामचरन निको गही, जिनि जाइ जनम ठगाई।''[2]

कबीर के अनुसार यह संसार एक बड़ा बाजार है जिसमें इंद्रियों के स्वाद रूपी ठग हैं और माया रूपी वेश्या भी जीव को ठगने का प्रयास करती है। ऐसी स्थिति में यदि माया के कूप्रभाव से बचना हो तो राम के चरणों का सहारा लेना होगा। यह माया सभी जीवात्माओं को अपने जाल में फॉसती है। कबीर के अनुसार–

"कबीर माया पापणी, फंध ले बैठि हाटि।

सब जग तो फंधै पड़या, गया कबीरा काटि।"[3]

कबीर के अनुसार माया पापिणी है। वह अपने हाथ में फंधा लेकर सारे संसार के प्राणियों को फँसाने का काम करती है। सारा संसार माया के फंदे में पड़ गया है। कबीर ही ऐसे भक्त हैं जो माया के फंदे को काटकर उससे बाहर हो जाते हैं। इसका कारण कबीर परमात्मा की शरण में चले गये थे वरना माया तो परमात्मा की आराधना भी नहीं करने देती।

"कबीर माया पापणी, हरि सूँ करै हराम।

मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम।।"[4]

कबीरदासजी कहते है माया अत्यंत पापिणी एवं दुष्टा है वह जीवात्मा को परमात्मा से मिलने नहीं देती। वह जीवात्मा के मुख से कड़वी बाते उच्चारित कराती है और राम नाम अर्थात ब्रह्म का उच्चारन नही करने देती। कबीर कहते हैं–

"कबीर माया मोहनी, सब जग घाल्या घाँणि।

कोई एक जन ऊबरै, जिनि तोड़ी कुल की काँणि ।।"[5]

कबीरदास जी कहते हैं माया मोहिनी है वह जादुगरनी है वह समस्त संसार को अपने फंदे में डालकर तेली की घानी से जैसे निकालने के लिए अनाज पीसा जाता है वैसे ही वह मनुष्य को पीसति है। इस संसार में शायद ही कोई बिरला व्यक्ति है जो इस माया के प्रभाव से बचता है जो सांसारिक मान –मर्यादाओं को छोड़कर परंपराओं का परित्याग करता है वही व्यक्ति इस माया के कूप्रभाव से बच सकता है। जो इसका परित्याग करता है माया उसके पीछे डोलती है। कबीर कहते हैं–

"कबीर माया मोहनी, माँगी मिलै न हाथि।

मनह उतारी झूठ करि, तब लागी डोलै साथि।।"[6]

कबीरदास जी कहते हैं यह माया ऐसी मोहक है कि इसे हाथ फैलाकर कुछ माँगों तो वह केवल कष्ट ही देती है अन्य कुछ नही देती। लेकिन ईश्वर के जिन भक्त साधकों ने इसे मिथ्या समझकर मन से निकाल दिया उनके पीछे यह दासी के समान डोलती रहती है।

मनुष्य के मन में उत्पन्न इच्छा, आशाओं के फलस्वरूप मनुष्य माया की ओर आकर्षित होता है। मनुष्य का शरीर मर्त्य है किन्तु उसकी इच्छाएँ नहीं मरती कबीर इस सबंध में लिखते हैं–

"माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया सरीर।

आसा त्रिष्णाँ नाँ मुई, यौं कहि गया कबीर।।"[7]

इसमें माया, मन, आशा और तृष्णा की अमरता की ओर संकेत करते हुए कबीर कहते हैं मनुष्य का मन मरता है न माया शरीर तो बार–बार मरता है किन्तु मनुष्य के मन से आशा तृष्णा समाप्त नही होती। इस आशा, तृष्णा के निर्माण का कारण माया ही है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

''अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया।।''

अर्थात भगवान राम की माया अत्यंत बलवती है। संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं उत्पन्न हुआ है जिसे वह न मोहित कर लेती हो। इस माया के जाल से कोई न बच पाया। इसी माया के जाल के कारण कैकयी के मन में मोह उत्पन्न हुआ कि उसका पुत्र भरत राजा बने जिसके फलस्वरूप कैकयी ने राम को वनवास भेजने का आग्रह किया। यही माया थी जिसके कारण रावण के मन में सीता के प्रति मोह उत्पन्न हुआ। इसी माया के कारण दाँव पर दाँव हारते हुए एक तो दाँव मैं जितुंगा यह अभिलाषा रखनेवाले युधिष्ठीर ने अंत में अपनी पत्नी द्रोपदी को भी दाँव पर लगा दिया। इसी माया के कारण दुर्योधन के मन में सत्ता प्राप्ति की लालसा उत्पन्न हुई। इस माया के प्रभाव से कोई भी बच नहीं सकता। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

''देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिबस विचारै।

तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारै।।''

अर्थात देवता, राक्षस, मुनि, नाग, मनुष्य सब माया के वश में हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि उनके हाथ में अपनत्व हारकर कोई लाभ नहीं है।

मनुष्य बड़े से बड़े पद पर जाता है ऐश्वर्य, सम्मान, प्रतिष्ठा सब प्राप्त करता है वह जानता है सारी धनसंपदा यहीं छोड़कर जानेवाला है फिर भी माया के प्रभाव से लालच में आकर अनेक कूकर्म कर बैठता है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार में फँसे लोग इसी माया के शिकार हैं।

मनुष्य के छः शत्रु हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया, मत्सर। माया विभिन्न रूप परिधान कर मनुष्य का घात करती है। वृक्ष के नीचे बैठने से मनुष्य को छाया मिलती है, शितलता प्राप्त होती है। किन्तु माया रूपी वृक्ष और उसकी छाया मनुष्य को दुःख ही प्रदान करते हैं। कबीर कहते हैं–

''माया तरवर त्रिविध का, साखा दुख संताप।

सीतलता सुपिनै नहीं, फल फीकौ तनि ताप।।''[8]

यह माया रूपी वृक्ष,सत, रज और तम गुणों से मिलकर बना है। इसकी शाखायें दुःख और संताप की है। इसके नीचे तो सपने में भी शीतलता प्राप्त नहीं होती। अतः इस माया से मनुष्य ने सावधान रहना चाहिए।

कबीर कहते हैं सद्गुरू की कृपा तथा परमात्मा की आराधना से ही मनुष्य इस माया के कष्ट से बच सकता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि,

- माया वेश्या के समान है जो विभिन्न रूप परिधान कर मनुष्य को मोहित करती है। इस माया से मनुष्य ने सावधान रहना चाहिए ।
- माया मोहिनी है, पापिणी है, जादुगरणी है। वह व्यक्ति को अपने जाल में फाँस लेती है।
- माया मनुष्य को बर्बाद करती है।
- मनुष्य ने माया से सावधान रहना चाहिए।
- माया से बचने के लिए मनुष्य ने स्वयं पर नियंत्रण रखना चाहिए।
- माया से बचने के लिए परमात्मा के शरण में जाना लाभदायक सिद्ध होता है जिससे मनुष्य माया के कूप्रभाव से बच सकता है।

संदर्भ संकेत सूचि :

१. श्रीमद् भगवदगीता अध्याय १८ श्लोक ६१
२. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२५
३. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२५
४. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२५
५. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२५
६. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२६
७. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२६
८. कबीर ग्रन्थावली–संपा.श्यामसुंदरदास, पृ.२६